B.A-Part-II Systems of Psychology
Paper-IX

18: व्यवहारवाद के विकास में वाटसन के योगदान की चर्चा करें

Ans- व्यवहारवाद की जितनी अधिक यथार्थ व्याख्या वाटसन ने की उतनी उससे पहले किसी भी मनोवैज्ञानिक ने नहीं किया। यद्यपि वाटसन द्वारा स्थापित व्यवहारवादी सम्प्रदाय भी अन्य सम्प्रदायों के समान एकांगी है लेकिन फिर भी इस सम्प्रदाय ने मनोविज्ञान को विशुद्ध वैज्ञानिक स्तर पर लाने के लिए जो प्रयास किया उसके लिए मनोविज्ञान सदैव उसका ऋणी रहेगा मनोविज्ञान में वाटसन का उद्देश्य उसको अन्य विज्ञानों के समान एक यथार्थ और निश्चित विज्ञान है वाटसन के शब्दों में "~~व्यवहारवादी और अधिक~~ व्यवहारवादी इस निर्णय पर पहुँचे कि वे अमूर्तो और अज्ञेयो के साथ काम करने से अब और अधिक सन्तुष्ट नही रह सकते है उन्होंने निश्चित किया कि या तो मनो-विज्ञान को छोड़ दिया जाय या उसे एक प्राकृतिक विज्ञान बनाया जाय"

वाटसन को व्यवहारवादी सम्प्रदाय का जन्मदाता माना जाता है। उसने सन 1925 में व्यवहारवाद पर एक ग्रन्थ लिखे और उन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय में व्यवहारवाद पर कुछ भाषण दिया है। अतः उसके व्यवहारवाद का जन्म सन 1912 के लगभग में हुआ।

मनोविज्ञान में व्यवहारवादी सम्प्रदाय के अनुसार मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक विशुद्ध प्रयोगात्मक शाखा है। उसका उद्देश्य व्यवहार की व्याख्या, नियन्त्रण और उसके विषय में भविष्यवाणी करना है। व्यवहारवादी मनोविज्ञान की पद्धतियों को विशुद्ध वैज्ञानिक रूप देना चाहते है। अतः वे अन्तर्दर्शन विधि के विरुद्ध हैं। वाटसन ने मनोविज्ञान में चेतना के प्रत्यय का पूर्ण बहिष्कार किया। व्यवहारवादी चेतना के साथ-साथ मानसिक दशाओं, मन, संकल्प बहिष्कार किया। व्यवहारवादी चेतना के साथ-साथ मानसिक दशाओं का प्रयोग नही करना चाहिए।

२) वे सम्पूर्ण व्यवहार को उत्तेजना और उसकी अनुक्रिया के शब्दों में समझना चाहते हैं। वाटसन की अध्यक्षता में व्यवहारवाद, संरचनावाद और साहचर्यवाद के विरुद्ध एक विद्रोह के रूप में उपस्थित हुआ। नई पीढ़ी के मनोवैज्ञानिकों ने वाटसन का नेतृत्व स्वीकार किया। क्योंकि उन्हें आशा थी कि वाटसन मनोविज्ञान के क्षेत्र से अन्ध-विश्वासों, रहस्यों और दार्शनिक परम्पराओं को निकाल देना चाहता है। वाटसन व्यक्तित्व के विकास में परिवेश को अत्यधिक महत्व देता था। उसका विश्वास था कि परिवेश में आवश्यक परिवर्तन करके किसी भी व्यक्ति को कुछ भी बनाया जा सकता है। उसके इस विश्वास से समाज में हर प्रकार के दोषों के दूर होने की आशा बंधी। इस प्रकार वाटसन मनोवैज्ञानिक के साथ-साथ एक जनहित नेता भी बन गया। मनोविज्ञान में वाटसन का एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान पशु मनोविज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में था। वाटसन ने विशेषतया पशु मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान किया था। वाटसन का विचार था। कि पशु मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान के द्वारा मानव मनोविज्ञान के क्षेत्र में अधिक से अधिक अनुसन्धान की आवश्यकता पर जोर दिया।

मनोविज्ञान में विभिन्न प्रक्रिया के विषय में वाटसन के व्यवहारवादी दृष्टिकोण से उसका योगदान निम्नांकित है-

1. व्यवहार की व्याख्या :->

वाटसन ने पशु और मानव के सभी आन्तरिक और बाह्य अर्जित और अनर्जित व्यवहार की उत्तेजना-अनुक्रिया से समझाने की चेष्टा की। व्यवहार एक उत्तेजना से प्रारम्भ होता है। जैसे आँखों से प्रकाश की किरण का आना, कानों से शब्द का सुनना

इत्यादि । उत्तेजना जीव से अनुक्रिया उत्पन्न करती है। ये अनुक्रियाएँ आन्तरिक भी हो सकती है और बाह्य भी, अर्जित भी हो सकती है। और अनर्जित भी। मनुष्य के विभिन्न कार्यों में सीखने के द्वारा बहुत-सी जटिल अनुक्रियाएँ बन जाती है।

2. संवेदना और प्रत्यक्ष →

पशु मनोविज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वाले मनोवैज्ञानिकों के रूप में वाटसन मौखिक रिपोर्ट की विधि को अधिक पसन्द नही करता था। इसके स्थान पर वह मौखिक अनुक्रिया शब्द का प्रयोग करता है। जब कोई व्यक्ति पीले रंग को देखता है और कहता है कि मैं पीला रंग देखता हूँ तो यह उसकी एक मौखिक अनुक्रिया है। लेकिन वास्तव में वाटसन यह नही सिद्ध कर सका कि यह मौखिक अनुक्रिया मौखिक रिपोर्ट से किस प्रकार भिन्न है

(3) स्मृति प्रतिमाएँ :→

वाटसन के अनुसार समस्त व्यवहार इन्द्रियों और मांसपेशियों की गति का परिणाम है। वाटसन स्मृति प्रतिमाओं को नही मानता था। उन्हें यह दिखाने की चेष्टा की ये तथाकथित स्मृति प्रतिमाएँ वास्तव में इन्द्रियों और ~~मास~~ मांस-पेशियों की ही प्रतिक्रियाएं है। उदाहरण के लिए दृष्टि प्रतिमा मे नेत्र की मांसपेशियों का ही प्रतिक्रियाएँ और सुप्त वाक् गतियो मे सम्मिलित है।

(4) अनुभूति और संवेग :→

वाटसन के अनुसार अनुभूतियाँ भी इन्द्रिय चालित कार्य है उदाहरण :- सुख की अनुभूति विभिन्न इन्द्रियों से आने वाली उत्तेजनाओं और मांसपेशियों मे होने वाली गतियों का परिणाम है। संवेग की व्याख्या करते हुए वाटसन ने उसकी सम्पूर्ण शरीर में और विशेषतया जाठरिक और ग्रन्थि सम्बन्धों

4)

व्यवस्था में अत्यधिक क्षोभ बतलाया है। भिन्न-भिन्न संवेगों में जठर और ग्रन्थियों के भिन्न-भिन्न प्रतिमान देखे जा सकता है। इस प्रकार वाटसन के अनुसार संवेग की विशेष परिस्थिति में जीव में कुछ बाहरी प्रक्रियाँ और कुछ आन्तरिक परिवर्तन होते है।

(5) सीखना :-

सीखने की व्यवस्था में वाटसन ने थॉर्नडाइक के प्रभावो के नियम के स्थापना की। उसके अनुसार सीखने में नवीनता और आवृत्ति के नियम काम करते है जो अभ्यास के नियम के अन्तर्गत आते है इस प्रकार प्रारम्भ में वाटसन ने सीखने में प्रयत्न और भूल की विधि को मान्यता दी। बाद में उसने अधिकतर रूसी शरीरशास्त्री पैवलॉव के प्रतिबद्ध अनुक्रिया के सिद्धान्त के द्वारा सीखने को समझाने की चेष्टा की है।

(6) चिन्तन :-

वाटसन ने चिन्तन को भी सुप्त गत्यात्मक व्यवहार से समझाया हैं वाटसन प्रत्येक प्रकार के व्यवहार को इन्द्रिय-चालक कहलाता है। दूसरी ओर अधिकतर वयस्क मनुष्य चिन्तन मे बोलते नही बल्कि चुपचाप सोचने में बोलते हैं वाटसन का विचार था कि इस परिवर्तन का कारण यह था कि वाह्री आदि का स्थान आन्तरिक व्यवहार ले लेता है। इस सिद्धान्त के अनुसार चिन्तन में वाक् अंगों की प्रक्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि वह बिल्कुल नही मालूम पड़ता है। चिन्तन मे मुख की भी क्रियाएँ होती है। वाटसन के सिद्धान्त से नये-नये प्रयोग को बडी प्रेरणा मिली। अनेको प्रयोग से यह प्रेरणा मिली है कि चिन्तन में वाक् अंग तथा जिह्वा आदि में कुछ क्रिया आवश्य होती है।

लेकिन भिन्न-भिन्न प्रकार के चिन्तन में इस प्रक्रिया में क्या अन्तर होता है इसको जानने का कोई साधन नहीं है. फिर यह क्रिया सभी प्रयोगों में नहीं दिखायी जाती है।

(7) परिवेशवाद :->

व्यक्तित्व के विकास के सम्बन्ध में वाटसन ने वंशानुक्रमण के विरुद्ध परिवेश पर अत्यधिक जोर दिया है. यद्यपि इसका व्यवहारवाद से कोई विशेष आवश्यक सम्बन्ध नहीं है। वाटसन ने घोषणा कि यदि उसे किसी सामान्य बालक के परिवेश को पूरी तरह नियन्त्रित करने का अधिकार दिया जाय तो वह उसका किसी भी प्रकार का विशेषज्ञ, डाक्टर, वकील, कलाकार, व्यापारी - यहाँ तक कि भिखारी और चोर भी बना सकता है चाहे उसके माता-पिता की बुद्धि, प्रवृत्तियाँ, योग्यताएँ, व्यवसाय, प्रजाति आदि कुछ भी क्यो ना हो।

Dr. Randhir Kumar
Dept of Psychology
Subject -> BA - II Systems of Psychology
V.R.C. Rosera Samastipur Paper - IV
9570435959, 9431852588